



Written by कुमार सौवीर

Monday, 08 January 2018 23:49

परिवारिक रश्मि के बुरी तरह खदबदाने लगे हैं। उसके साथ ही साथ, जब से संयुक्त त परिवारिक इकड़ियां धुं वस् त होने लगी है, तब से ही समाज के सबसे कमजोर कड़ी साबित बनता जा रहा है परिवार का बच्चा चा, और दूसरे स्तर पर वृद्ध-जन परिवारिक तनाव उपजने, भड़कने लगे हैं। झगड़ों का सलिसलिया बेहिसाब बढ़ने लगा है। जो पड़ोसी हमारे सोचने खाने-पीने रहने-सोचने के हमसफ़र हुआ करते थे, अब उपभोक्ता संस्कृति में समाज में खुद अपने आप में रहते हुए भी समाज में कट से जाते हैं। जब परिवार का क्ल और सूक्ष्म म परिवार इकड़ में तब् दील हुआ, तो पड़ोसी में भी भाईचारा के सारे रश्मि ते बखिर गये। वह पुलिस वाले, जिनका दायित्व लोगों की बातचीत सुनना और उनका समाधान खोजना होता था, पीड़ित जन के सुरक्षा देना हुआ करता था, वह अब अक्ल सर सरे आम लूट, मनमानी और हिसा पर आमादा होते हैं देखि जाते हैं। पुलिस का चरित्र आम आदमी के इंसान नहीं बल्कि अब हलाल होने के हालत पहुंच चुके मुरगा समझने के प्रवृत्ति पाल बैठा है।

[परिवारिक रश्मि के बुरी तरह खदबदाने लगे हैं।](#)